International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 27-04-2025, Accepted: 28-05-2025, Published: 12-06-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 75-79

ऑनलाइन एवं डिजिटल शिक्षा: शिक्षा के बदलते परिवेश में आज का भारत

Dr Govind Kumar Rohit
Assistant Professor, Department of Sociology, Radha Govind University, Ramgarh, Jharkhand, India

सारांष
शिक्षा मानव जीवन का आधार है. किसी भी समाज की संरचना को बेहतर बनाने में शिक्षा की महत्ती भूमिका होती है. यह न केवल व्यक्ति के व्यवहार, विचार एवं ज्ञान में वृद्धि करता है अपितु मानव के व्यक्तित्व निर्माण और उन्नयन में भी सहायक है. व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी व्यवस्था है जो मनुष्य को अपने समाज में उपयोगी, रचनात्मक एवं उत्पादक भूमिका निभाने में सक्षम बनाती है. वर्तमान में यह शाश्वत व्यवस्था साक्षरता के रूप में परिलक्षित होती है. दुसरे संसाधनों की तरह साक्षरता भी आज हमारे जीवन की सबसे बड़ी जरूरतों में से एक है. साक्षरता सिर्फ हमारे खुद के विकास तक सिमित नहीं है. इसका गहरा सम्बन्ध सामाजिक और आर्थिक विकास से भी है. भारत में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अनुसार यदि कोई व्यक्ति अपना नाम लिखने और पढ़ने की योग्यता प्राप्त कर लेता है तो उसे साक्षर माना जाता है. सूचना क्रांति के इस दौर में पारम्परिक शिक्षा प्रणाली के साथ– साथ कंप्यूटर के अनुप्रयोग का ज्ञान होना अत्यावश्यक है. वर्तमान में सभी निर्माण, विकास एवं जन कल्याणकारी योजनाएं कंप्यूटरकृत किये जा रहें हैं जो बिना कागज के इस्तेमाल के इलेक्ट्रॉनिक रूप से जनता तक पहुँच सके. भारत में डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 'प्रधानमंत्री ग्रामीण साक्षरता अभियान (PMGDISHA)' की शुरुआत फरवरी, 2017 में की है. डिजिटल शिक्षा इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों पर आधारित एक शिक्षण मॉडल है. वर्तमान समय में डिजिटल शिक्षा की भूमिका एवं महत्व में निरंतर वृद्धि हो रही है साथ ही डिजिटलीकरण के कारण रोजगार के क्षेत्र में भी परिवर्तन देखने को मिल रहें हैं. जिस कारण इसके अच्छे प्रशिक्षकों की भी आवश्यकता बढ़ी है. जिससे रोजगार के नए क्षेत्र उत्पन्न हो रहें हैं. इसके अतिरिक्त प्राथमिक शिक्षा के साथ भी डिजिटल शिक्षा का ज्ञान देने की आवश्यकता है, जिसे डिजिटल शिक्षा के अंतर्गत स्मार्ट क्लास, आडियो–विजुअल क्लास अदि के माध्यम से सुदूर क्षेत्रों के छात्रों तक नवीन ज्ञान उपलब्ध कराने की आवश्यकता है. भारत में, डिजिटल शिक्षा के महत्व को देखते हुए केंद्र सरकार ने नई शिक्षा निति, 2020 में ऑनलाइन एवं डिजिटल शिक्षा के न्याय सम्मत उपयोग को सुनिश्चित करने हेतु अधिनियम बनाये हैं.

मूलषब्द: शिक्षा, डिजिटल शिक्षा, डिजिटल साक्षरता, नई शिक्षा निति, 2020.

आज की दुनिया की अधिक से अधिक चीजें डिजिटल हो रही हैं. भारत के महानगरों और अन्य शहरों की शिक्षा प्रणाली भी काफी हद तक अधुनिकीकृत हो गई है, जिससे डिजिटलीकरण के लिए रास्ता बन गया है. डिजिटल शिक्षा, कई अंतरराष्ट्रीय स्कूलों के साथ– साथ भारत की पारम्परिक शिक्षा प्रणाली में अपनी जगह बना रही है और पारम्परिक कक्ष प्रशिक्षण का स्थान ले रही है. प्राचीन भारत का अवलोकन करे तो उसमें गुरुकुल पद्धति शिक्षा का माध्यम थी, जहाँ शिक्षक छात्रों को पेड़ों के नीचे बैठाकर शिक्षा प्रदान करते थे. तत्पश्चात ब्लैक बोर्ड के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाने लगी. कंप्यूटर के अविष्कार एवं इंटरनेट तथा सेटेलाइट के बढ़ते प्रयोगों ने डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया. सुदूर क्षेत्रों में जहाँ आने जाने के मार्ग से लेकर स्कूलों तक का आभाव है वहाँ तक ऑनलाइन शिक्षा को सुगमता से पहुँचाया जा सकता है. ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली (ई– लर्निंग) इलेक्ट्रॉनिक माध्यम पर आधारित शिक्षा और अध्यापन का रूप है, जिसे कंप्यूटर आधारित शिक्षा, वेब आधारित शिक्षा एवं आभासी कक्षाओं आदि के माध्यम से शिक्षार्थी को प्रदान की जाती है. डिजिटल साक्षरता का सामान्य अर्थ कंप्यूटर के माध्यम से वेब पेज को पढ़ने, एवं डिजिटल चित्रों को कैसे देखें, समझें पर आधारित है. डिजिटल साक्षरता पूर्णतरू अभ्यास पर आधारित एक ऐसा टूल है जिसके तौर तरीकों की एक सीमा तक उपयोग करके विचारों के प्रतिनिधित्व एवं समझ को सक्षम बनाने में सहायक है. डिजिटल साक्षरता, साक्षरता के नए अयामों का केंद्र है. यह भविष्य के प्रति गंभीरता से उन नये विचार को गढ़ने का संकेत देता है जिसमें प्राथमिक स्कूली शिक्षा के स्थान पर डिजिटल शिक्षा को महत्व दिया जाय (Brien and Scharber) 2008). डिजिटल साक्षरता के परिभाषा से तात्पर्य, डिजिटल युग में सफ़ेद पृष्ठ पर काले अक्षरों को लिखने, पढ़ने के स्थान पर नये प्रारूप में डिजिटल रूप में उपलब्ध सूचनाओं जो ध्वनियों, चित्रों के संयोजन जिसे मल्टीमिडिया कहा जाता है, के मिश्रित शब्दों को समझने पर आधारित है (Lanham, 1995). देखा जाय तो भारी भरकम बस्ते और ढेर सारी किताबों के साथ स्कूल जाना अब बीते दिनों की बात हो गई है. इन सब पारंपरिक चीजों को पीछे छोड़ते हुए अब ज्यादातर स्कूलों में डिजिटल शिक्षण और अन्य डिजिटल पद्धतियों का उपयोग किया जा रहा है. डिजिटल शिक्षा अथवा ऑनलाइन शिक्षा का तात्पर्य प्रौद्योगिकी, उपकरण, अंतर्क्रियाशीलता, अवधि, अध्ययन सामग्री और उपर्युक्त माध्यमों से कक्षा में शिक्षण को और अधिक संवादात्मक बनाना है. इस डिजिटल अथवा ऑनलाइन शिक्षा को इंटरनेट के माध्यम से प्रदान करने अथवा एक प्रकार का सीखने की एक लचीला पद्धति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है. ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल दुनिया का एक परिणाम है जिसने शिक्षा के विभिन्न स्तरों को शिक्षित करने के विभिन्न दृष्टिकोणों एवं कक्षा के बाहर और कक्षा से दूर बहुत कुछ सीखने की चीजों को एक मेज पर ला कर रख दिया है (kantharia, 2020). डिजिटल शिक्षा की बढती मांग के कारण भारत दुनिया में शिक्षा के लिए तीसरा सबसे बड़ा बाजार बन गया है जहाँ ई– लर्निंग का बाजार तीन बिलियन से आधिक होने का अनुमान है. ऑनलाइन शिक्षा लोगों को सीखने के विश्वस्तरीय अनुभव तक पहुँचने में मदद करती है वह भी तब जब पारम्परिक उच्च शिक्षा आर्थिक एवं व्यक्तिगत कारणों से संभव नहीं हो पाती है. (Laksmi, 2016).

पिछले दो दशकों में हुए सामाजिक परिवर्तनों में तकनीकी तंत्र ने समाज को कई प्रकार से प्रभावित किया है. प्रकृति द्वारा खड़ी की गई समस्याओं का सामना और अपने आपको उनके अनुरूप ढालना और इस प्रकार भिन्न पर्यावरण के कारण समाजों के बीच

आए अंतर को दूर करने में तकनीक हमारी मदद कर रही है. जिसका उदाहरण वर्तमान में कोरोना महामारी के कारण उपजा संकट है. कोरोना महामारी के कारण शिक्षा क्षेत्र भी गंभीर संकट से गुजर रहा है. शैक्षणिक संस्थानों के बंद होने के कारण विद्यार्थियों को पठन पाठन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है, जिसका असर शिक्षा के पारम्परिक साधनों पर पड़ रहा है. ऐसे संकट के समय में डिजिटल शिक्षा का महत्व काफी बढ़ गया है, जिसके महत्व को देखते हुए भारत में, केंद्र सरकार द्वारा नई शिक्षा निति, 2020 में उपरोक्त संभावित चुनौतियों को ध्यान में रख कर डिजिटल शिक्षा को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के वैकल्पिक साधनों के रूप में तैयार करने पर जोर दिया गया है. हालाँकि डिजिटल शिक्षा के संचालन में बहुत सी चुनौतियां हैं. गरीब एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों तक इंटरनेट की सिमित पहुँच के साथ डिजिटल साक्षरता के जागरूकता कार्यक्रम को बड़े स्तर पर न फैलाये जाने के कारण एक बड़ी जनसँख्या इसके लाभ से अभी वंचित है.

अध्ययन का उद्देश्य

इस लेख का उद्देश्य छात्रों पर डिजिटल साक्षरता के घटकों यथा डिजिटल शिक्षा की संरचना, कार्य एवं भारत सरकार द्वारा लागु नई शिक्षा निति, 2020 में उल्लेखित ऑनलाइन एवं डिजिटल शिक्षा सम्बंधित नीतियों के महत्व का विश्लेषण करना है.

शोध– प्राविधि

वर्तमान अध्ययन नई शिक्षा निति, 2020, विभिन्न जर्नल्स, पुस्तकों एवं वेबसाइट्स के द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है.

भारत में डिजिटल शिक्षा की पृष्ठभूमि

शिक्षा एक ऐसे रथ के समान है जो किसी राष्ट्र को समग्र विकास के पथ पर ले जाता है. भारत के सांस्कृतिक विरासत एवं अध्यात्मिक पहलुओं पर गौर करें तो भारत एक समृद्ध राष्ट्र रहा है जहाँ शिक्षण का माध्यम शिक्षक– छात्र के आमने–सामने के सम्बन्ध पर आधारित रही है. शिक्षा के क्षेत्र में ई– लर्निंग अपेक्षाकृ त नई अवधारणा है. सन् 1950 के दशक से स्लाइड प्रोजेक्टर और टेलीविजन आधारित कक्षाएं चलन में हैं. जबकि ऑनलाइन सीखने के सर्वप्रथम उदाहरणों में से एक 1960 में अमेरिका का इलिनोइस विश्वविद्यालय है जहाँ नेटवर्क बनाने के लिए इंटरनेट के बजाय टर्मिनल का प्रयोग किया गया था. तत्पश्चात सन् 1984 में पहली बार ऑनलाइन पाठ्यक्रम की पेशकश टोरंटो विश्वविद्यालय के द्वारा की गई. सन् 1989 में फिनिक्स विश्वविद्यालय पूरी तरह से ऑनलाइन शिक्षण के द्वारा स्नातक एवं स्नातकोत्तर की डिग्री प्रदान करने वाला दुनिया का पहला शैक्षणिक संस्थान बन गया. यह एक ऐसी क्रांति की शुरुआत थी जिसकी संभावना बड़े पैमाने पर तत्कालीन जनता के लिए अज्ञात थी. सन् 1990 के दशक के शुरुआत में ब्रिटेन डिजिटल दूरस्थ शिक्षा शुरू करने वाले विश्वाविद्यालयों में से एक था. वर्तमान में भारत में इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दुनिया का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है जिसमें लगभग चार मिलियन छात्र पंजीकृत है, जिनमें से अधिकांश वर्तमान में ऑनलाइन तरीकों से शिक्षा प्राप्त करते हैं. वर्तमान में उच्च गति के इंटरनेट की उपलब्धता के कारण डिजिटल शिक्षा का बाजार काफी तेजी से बढ़ रहा है जिससे भविष्य में डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में और वृद्धि होने के आसार हैं. चूँकि भारत में डिजिटल शिक्षा में भाषा की समस्या एक महत्वपूर्ण बाधा है. इसके अतिरिक्त सभी परिवारों तक संचार तकनीकों के सिमित प्रयोग से भी है. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (National Sample Survey) के वर्ष 2017–18 के रिपोर्ट के अनुसार देश के 24: परिवारों का इंटरनेट तक पहुँच थी. जिसमें 15: ग्रामीण क्षेत्रों में एवं 56: नगरीय क्षेत्रों में कंप्यूटर चलाने में सक्षम थे. ये आंकड़े इस बात को स्पष्ट करते हैं कि ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के संचालन में स्वाभाविक रूप से कम से कम दो तिहाई बच्चे ऑनलाइन शिक्षा के दायरे से बाहर हो जायेंगे.

डिजिटल शिक्षा का स्वरूप

बदलते दौर में जहाँ सब कुछ डिजिटल हो रहा है, वहीं शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछुता नहीं है. शिक्षा को आकर्षक, स्पष्ट धनियुक्त, मनोरंजक एवं समझने योग्य बनाने में वीडियो–आधारित शिक्षा का डिजिटल शिक्षा में बड़ा योगदान है. डिजिटल शिक्षा के बारे में सबसे अच्छी बात यह है यह कि उपयोगकर्ता के अनुकूल है. जिसे कोई भी, कहीं भी और कभी भी इस्तेमाल कर सकता है. चाहे वह यात्रा के दौरान हो या फिर किसी कारणवश अवकाश पर हो. यह सुदूर क्षेत्रों में या बिना कक्षा में गये ही घर बैठे सीखने की प्रक्रिया में बेहतर योगदान दे सकता है. आज हम जिस प्रकार से सीखते हैं उसमें एक पूरी क्रांति प्रौद्योगिकी द्वारा लाइ गई है जो कक्षाओं में डिजिटल स्क्रीन, स्काइप, व्हाट्सएप और जूम वीडियों कॉल आदि अनेकों माध्यमों के द्वारा छात्रों को रचनात्मक तरीकों से ज्ञानवर्धन करने में सहायक है. डिजटल युग की इस विशेषता ने ही छात्र की व्यस्तता को और बढ़ा दिया है क्योंकि यह विभिन्न अनुदेशात्मक शैलियों को जोड़ती है. इसके अतिरिक्त वेब आधारित Massive Open Online Course (MOOC) के असीमित भागीदारी ने भारत को दुनिया में MOOC के क्षेत्र में एक बड़ा प्लेटफ़ॉर्म बना दिया है. संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद भारत,दुनिया में डव्ळ के लिए सबसे बड़ा बाजार माना जाता है.

1. NROER

छब्ज् एवं ब्म्ज् द्वारा तैयार प्रोजेक्ट है जिसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से ऑनलाइन प्लेटफॉर्म तैयार किया गया जिसका शुभारम्भ 13 अगस्त 2013 को किया गया. छत्व्त् पूर्णतरू निरूशुल्क है जो प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं के विषयों के लिए भारत के विभिन्न भाषाओं में शैक्षणिक संसाधन उपलब्ध करवाता है. साथ ही इसमें ऑनलाइन टेस्ट की सुविधा भी उपलब्ध है.

2. SWAYAM (Study Webs of Active Learning for Young Aspiring Minds)

यह भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया कार्यक्रम है. जिसे शिक्षा निति के तीन प्रमुख सिद्धांतों Equity, फनंसपजल एवं Access के आधार पर तैयार किया गया है. इस कार्यक्रम का उद्देश्य आर्थिक, सामाजिक असामनता से उत्त्पन्न हुई खाई को भरकर उन छात्रों को मुख्यधारा में शामिल करना है जो अभी तक डिजिटल क्रांति से अछूते रह गये हैं. य कक्षा 9वीं से लेकर स्नातकोत्तर हेतु एक ऑनलाइन लर्निंग पोर्टल है जो पूर्णतरू निरूशुल्क है. पोर्टल पर उपलब्ध पाठ्यक्रम चार भागों में बटें हैं जो वीडियो व्याख्यान, अध्ययन सामग्री, प्रिंट, एवं ऑनलाइन विचार–विमर्श पर आधारित है.

3. CIET (Central Institute of Education Technology)

ब्म्ज् सन् 1984 में स्थापित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद (एन सी ई आर टी) की एक संघटक इकाई है जोकि मानव संसाधन विकास मंत्रालय (वर्तमान में शिक्षा मंत्रालय), भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान है. इसका उद्देश्य विद्यालय स्तर पर जनसंचार तकनीकों का उपयोग कर शैक्षिक प्रक्रियाओं की गुणवत्ता में सुधार करना है.

4. NPTEL (National Programme on Technology Enhanced Learning)

2003 में Indian Institute of Bangalore के साथ मिलकर सात भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (मुंबई, दिल्ली, कानपुर, खडगपुर, मद्रास, गुहावटी एवं रुड़की) द्वारा विश्वविद्यालय स्तर पर शुरू

एक ऑनलाइन शिक्षण मंच है जिसका उद्देश्य अपने सदस्य संस्थानों द्वारा पढ़ाये गये व्याख्यानों को ऑनलाइन दर्ज कराना है. जिससे उस संस्थानों में आर्थिक एवं अन्य कारणों से प्रवेश लेने में असमर्थ छात्रों तक उच्च गुणवत्ता की पहुँच सुगमता से हो सकेगी.

5. Swayam Prabha
यह 32 DTH चौनलों का समूह है जिसकी शिक्षण सामग्री NPTEL] IIT] UGC] CIC] IGNU] NCERT एवं NIOS द्वारा तैयार की जाती है जिसे 24X7 के आधार पर प्रसारण करता है जिसके तहत प्रतिदिन चार घंटे के लिए नई शिक्षण सामग्री जिसे एक दिन में पांच बार दोहराया जाता है ताकि छात्र अपने समय की सुविधा के अनुसार देख सकें.

6. Digital India
भारत सरकार द्वारा 1 जुलाई 2015 को शुरू किया गया एक प्रमुख कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों उच्च गति के इन्टरनेट नेटवर्क के माध्यम से डिजिटल साक्षरता को बढ़ाना हैं. साथ ही सरकारी सेवाओं को देश की जनता से जोड़ना भी है. जिससे सरकारी सेवाएँ जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, एवं न्यायिक सेवा आदि बिना कागज के इस्तेमाल के इलेक्ट्रॉनिक रूप से जनता को मिल सकें.

7. National Digital Library (NDL)
यह मानव संसाधन विकास मंत्रालय की एक परियोजना हैं जिसका शुभारम्भ 19 जून 2018 को किया गया. यह एक डिजिटल पुस्कालय है. जिसमें आडियो– वीडियो पुस्तकें, निबंध, व्याख्यान एवं उपन्यास अदि अन्य शिक्षण सामग्री उपलब्ध हैं. इसके 50 लाख पंजीकृत एवं 20 लाख सक्रीय उपयोगकर्ता हैं. इसे मोबाईल एप के माध्यम से भी देखा जा सकता है.

नई शिक्षा नीति, 2020 द्वारा ऑनलाइन एवं डिजिटल शिक्षा का विस्तार

भारत में डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा के भविष्य को बेहतर बनाने के केंद्र सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति का निर्माण किया गया है जिसके द्वारा डिजिटल शिक्षा की चुनौतियों को स्वीकारते हुए इसके लाभों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है. डिजिटल शिक्षा के विस्तार के लिए निम्न बिन्दुओं की अनुशंसा की गई है.

- सीखने के मिश्रित मॉडल
- ऑनलाइन शिक्षा के लिए पायलट अध्ययन
- वर्चुअल लैब्स
- शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण और प्रोत्साहन
- मानकों को पूरा करना
- ऑनलाइन मूल्यांकन और परीक्षाएं
- डिजिटल अंतर को कम करना
- डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर
- सामग्री निर्माण, डिजिटल रिपॉजिटरी और प्रसार
- ऑनलाइन शिक्षण मंच और उपकरण

हमारे उन्नत समाजों की वर्तमान स्थिति में शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और सरकार द्वारा सभी व्यक्तियों को अधिकार प्रदान करती है. इस उद्देश्य के लिए, कुछ औपचारिक संस्थाएं आयोजित की जाती हैं, जैसे स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय. मुफ्त और अनिवार्य राज्य शिक्षा को आज बड़े पैमाने पर स्वीकार किया जाता है और इसे पूरी तरह से सामान्य और प्राकृतिक स्थिति माना जाता है और यह शिक्षा के इतिहास में एक हालिया विकास भी है (Tandi, 2019) जिसके लिए यह नीति प्रतिबद्ध है. इस नई शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार केंद्र एवं राज्य शिक्षा क्षेत्र में सार्वजानिक निवेश को बढ़ाने तथा कुल सकल घरेलु उत्पाद(जीडीपी) को 6 : तक पहुँचाने की अनुशंसा की गई है. जोकि वर्तमान में शिक्षा का पर सार्वजानिक खर्च (केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा) जीडीपी (बजटीय व्यय आवंटन 2017–18 के विश्लेषण के अनुसार) के 4. 43: के आस पास है और सरकारी व्यय का केवल 10: शिक्षा पर किया जाता है (इकनोमिक सर्वे 2017–18), यह आंकड़ा अधिकांश शिक्षित एवं विकासशील देशों से काफी कम है NEP, 2020 च. 99). बदलते हुए इकनोमिक परिदृश्य में शिक्षा का बदलता यह स्वरूप, डिजिटल शिक्षा क्षेत्र की सीमाओं को दूर करने, डिजिटल कंटेंट एवं आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस में वृद्धि तथा कौशल विकास में बेहतरी के लिए लाभदायक हो सकता है.

प्राथमिक शिक्षा में डिजिटल साक्षरता का महत्व

आज कोविड 19 महामारी के कारण हमें काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है उसमें सर्वप्रथम है बच्चों की शिक्षा. ऑनलाइन यानी दूरस्थ शिक्षा ने महामारी की घड़ी में चल रही इस मुश्किल को आसान कर दिया है. इस तरह डिजिटल प्रौद्योगिकी ने डिजिटल साक्षरता के लाभ के नए रास्ते खोलें हैं. अब विद्यालय के निर्देशों के अनुसार शिक्षक बच्चों को घर से ऑनलाइन पढ़ा रहे हैं ताकि उनके शिक्षा में बाधा ना पड़े. स्कूली शिक्षा के अंतर्गत किताबें भरपूर ज्ञान तो देती हैं, पर बच्चों को पूरी तरह से अपनी ओर खींच नहीं पाती. जिसका एक कारण किताबों का मनोरंजक तरीके से प्रस्तुतिकरण का न होना है. वस्तुतरू डिजिटल शिक्षा स्वयं से उच्चारण करती हुई पुस्तक की तरह है. जिसकी सहायता से छात्र अपनी भाषा कौशल में सुधार कर सकते हैं. इसके अतिरिक्त छात्रों को अपनी सोच और क्षमता को भी बढ़ाने की आवश्यकता है क्योंकि यहाँ उन्हें शिक्षक के बिना ही अपने ज्ञान को बढ़ाना होता है. डिजिटल शिक्षा सुगम और सरल होने के साथ महंगी भी है जिसका कारण इसके उपकरणों का महंगा होना. यही कारण है कि डिजिटल शिक्षा देने वाले अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय स्कूल और विद्यालय नियमित स्कूलों की तुलना में अधिक महँगें होते हैं. इसी कारण डिजिटल शिक्षा पाना हर किसी के बस की बात नहीं होती. सर्वेक्षणों में यह जानकारी सामने आई है कि मात्र एक तिहाई अभिभावक ही अपने बच्चों के लिए डिजिटल शिक्षा की व्यवस्था कर सकते हैं. इंटरनेट के साथ एक डिजिटल स्क्रीन पर साल में कम से कम 6000 रूपये का खर्च आएगा. इस हिसाब से भारत में सिमित आय वर्ग के सभी बच्चों तक इसे पहुँचाने में 80,000 करोड़ का खर्च आ सकता है. डिजिटल शिक्षा के तहत सीखने के लिए बेहतर प्रबंधन और कठोर योजनओं की जरुरत होती है जिक्से लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित होना आवश्यक है.

डिजिटल शिक्षा की चुनौतियाँ

- इन्टरनेट की धीमी रफ़्तार को कम अथवा दूर करना
- ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता का आभाव को दूर करना
- अच्छे प्रशिक्षकों की कमी को दूर करना
- भाषा का अंग्रेजी मध्यम होना अर्थात क्षेत्रीय अथवा स्थानीय भाषा का अभाव को दूर करना
- महंगे उपकरणों के कारण निम्न शिक्षा के एवं गरीब छात्रों तक पहुँच को सुनिश्चित करना
- डिजिटल अध्ययन सामग्री का कई भाषाओँ में उपलब्धता का आभाव को दूर करना
- गणित एवं प्रयोगशाला आधारित विज्ञान विषयों को ऑनलाइन माध्यम द्वारा शिक्षा प्रदान करने की सटीक रुपरेखा का अभाव को दूर करना

डिजिटल शिक्षा के दोष

डिजिटल शिक्षा के गुणों के साथ कुछ कमियां भी है.

- सामाजिक सामंजस्य का अभाव.

- किसी मानक निति का न होना.
- छात्र एवं शिक्षक के बीच बेहतर संवाद का आभाव
- रचनात्मक क्षमता में कमी
- छात्रों में आलस्य की भावना

विमर्श

कई बार छात्र कई कारणों के चलते अपने शिक्षकों से कक्षा में प्रश्न पूछने से झिझकते हैं. जिस कारण किसी भी विषय विशेष पर उनकी जानकारी या तो अधूरी रह जाती है, या फिर हो ही नहीं पाती. लेकिन डिजिटल शिक्षा के माध्यम से छात्र अपनी दुविधा को तुरंत मिटा सकते है, बल्कि उससे जुड़ी कई अन्य जानकारी भी प्राप्त कर सकते हैं. वर्तमान शिक्षा प्रणाली में डिजिटल साक्षरता एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली कारक है. डिजिटल शिक्षा का सबसे बड़ा फायदा यह है की इसके माध्यम से हमे ऑनलाइन अध्ययन सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है. लेकिन यह भी सही है कि डिजिटल प्रणाली पूरी तरह से भौतिक संरचना की जगह नहीं ले सकती है. उदाहण के लिए, प्रयोगशाला से सम्बंधित छात्र, जिन्हें अपने अध्ययन के लिए कक्षा के साथ – साथ भौतिक क्षेत्र पर भी निर्भर रहना पड़ता है. डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियाँ भी हैं. बेशक डिजिटल शिक्षा किफायती है, लेकिन कम आयवर्ग वाले समूह के छात्रों के लिए इसे हासिल करना महंगा हो सकता है. डिजिटल शिक्षा के छोटे–छोटे बच्चों की सेहत पर पड़ने वाले असर से निपटने के बारे में भी हमें सोचना पड़ेगा जो छात्रों में आलसी दृष्टिकोण को धीरे–धीरे विकासित कर रहा है . जिससे छात्र अपनी सोच और क्षमताओं को छोड़ पूरी तरह से इस पर निर्भर हो रहें हैं. देखा जाये तो डिजिटल शिक्षा छात्रों में शिक्षा के बुनियादी तरीके को भुला रही है. यहाँ तक कि अब बच्चे मामूली समस्याओं और होमवर्क के लिए भी डिजिटल साधनों की सहायता ले रहे हैं. पारंपरिक शिक्षा में छात्रों को नैतिक शिक्षा आसानी से दी जाती है लेकिन डिजिटल शिक्षा में यह संभव नहीं है. आज के समय में डिजिटल शिक्षा जरुरी तो है, लेकिन इसका उपयोग एक हद तक और किसी की देख रेख में ही होना चाहिए. जिससे इस तकनीक का छात्रों को पूरा पूरा लाभ मिले, वहीं उनका मानसिक, शारीरिक और चारित्रिक हनन भी न हो.

निष्कर्ष

संक्षेप में, डिजिटल शिक्षण पद्धति वर्तमान शताब्दी के सबसे अधिक जीवन बदलने वाले नवाचारों में से एक है. शिक्षा शायद आधुनिक युग की सबसे बड़ी संपत्ति है और ऑनलाइन शिक्षा ने इसे पूरी आबादी के बीच प्रसारित करने का एक माध्यम प्रदान किया है. डिजिटल एवं ऑनलाइन शिक्षा समय, स्थान और गति में विशेष महत्व रखती है. जिससे किसी भी प्रकार की शिक्षा को सुदूर स्थानों तक सुगम तरीके से पहुँचाया जा सकता है. शैक्षणिक स्थिति का अवलोकन करें तो डिजिटल शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा के छात्रों के गुणवत्ता में सुधार हेतु एक प्रभावी उपकरण का कार्य करता है. वर्तमान भारत कई सामाजिक परिवर्तनों से गुजरा है देखा जाय तो आज का भारत शिक्षा के क्षेत्र में संक्रमण के दौर में है जहाँ डिजिटल शिक्षा भारत की पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में अपनी जगह बना चुकी है. जो सम्भावना से भरी स्थिति को प्रस्तुत करता है, जिसके संदर्भ में नई शिक्षा नीति, 2020 का यदि उचित रूप से दोहन किया जाए, तो वांछित उदेश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित होगी जो पूरी दुनिया में भारत को विकास और समृद्धि के नए दौर में पहुंचा सकता है.

संदर्भ–सूची

1. Dede C, Kelly E. Digital education. Issues in Science and Technology,2005:22(1):10–12. Retrieved from http://www.jstor.org/stable/43314266 access on March 20, 2021.
2. Jha N, Shenoy V. Digitization of Indian Education Process: A Hope or Hype. IOSR Journal of Business and Management,2016:18(10):Ver. III.
3. Jena PK. Impact of Pandemic Covid-19 on education in India. International Journal of Current Research,2020:12(07):12582–12586.
4. Kumar A, Abbas Z. Higher Education in Digital India. International Journal of Research in Business Studies,2019:4(1):ISSN: 2455-2992.
5. Lakshmi. Digital Education in India. International Journal of Innovative Research in Information Security,2016:09(3):ISSN: 2349-7009.
6. Lanham R. Digital Literacy. Scientific American,1995:273(3):198–200. Retrieved March 20, 2021, from http://www.jstor.org/stable/24981795.
7. Madhale PD. Effect of Digital India on Indian Society. International Journal of Trend in Scientific Research and Development,2018:ISSN No. 2456-6470.
8. Meghna. Online School Education in India during Coronavirus Pandemic: Benefits and Challenges. Research Journal of Humanities and Social Sciences,2020:11(2):99–103. DOI: 10.5958/2321-5828.2020.00017.0.
9. National Educational Policy. Government of India, Ministry of Human Resource Development, 2020, 1–107.
10. O'Brien D, Scharber C. Digital Literacies Go to School: Potholes and Possibilities. Journal of Adolescent & Adult Literacy,2008:52(1):66–68. Retrieved March 20, 2021, from http://www.jstor.org/stable/30139651.
11. Prabha S. About SWAYAM Prabha. Retrieved 2018, from https://www.swayamprabha.gov.in/index.php/about.
12. Rastogi. Digitalization of education in India An analysis. International Journal of Research and Analytical Reviews,2019:6(1):e2348–1269, ISSN 2349-5138.
13. Roshan KM, Majid AM. The impact of Digital India on Educational System. Café Dissensus, 2018, ISSN: 2373-177X.
14. Tandi S. Educational contribution of Emile Durkheim: a functional assessment. The Research Journal of Social Sciences,2019:10(02):145–156. ISSN: 0025-1348 (P), 2456-1356 (O), Journal no- 40820, Journal Doi: 10.105373/00251348 www.aensi.in.
15. https://ciet.nic.in/ access on March 20, 2021.
16. https://www.dsrvsindia.ac.in/ access on April 28, 2021.
17. https://www.digitalindia.gov.in/ access on Sep 13, 2021.
18. http://ignou.ac.in/ access on Nov 16, 2021.
19. http://mospi.nic.in/NSSOa access on Nov 27, 2021.
20. https://sdcampus.co.in/hi/guidelines-for-digital-education/ access on Nov 29, 2021.
21. https://www.education.gov.in/en access on Oct 23, 2021.
22. https://sdcampus.co.in/hi/guidelines-for-digital-education/ access on Dec 02, 2021.
23. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf access on Dec 03, 2021.
24. https://hindi.mapsofindia.com/my-india/india/digital-education-in-india-and-class-room-teaching-advantages-and-disadvantages access on Dec 11, 2021.

25. https://www.pib.gov.in/indexd.aspx access on Dec 11, 2021.
26. https://www.swayamprabha.gov.in/index.php/about access on Dec 11, 2021.
27. https://nptel.ac.in/about_nptel.html access on Dec 21, 2021.
28. https://swayam.gov.in/ access on Dec 23, 2021.
29. https://www.nios.ac.in/ access on Dec 24, 2021.
30. https://nroer.gov.in/welcome access on Dec 28, 2021.